साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 41, जुलाई(द्वितीय), 2018

मज़हब

उषा राजे सक्सेना

रोज़ की तरह उस दिन भी कंधे पर कुछ बड़ा सा काले रंग का बैग लटकाए जूही शर्मा तेज़ क़दमो से चलते हुए तक़रीबन भाग सी रही थी। तभी किसी ने उसे पुकारा,

'सुनिए...'

पिछले पाँच सालों से मिचम में रह रही जूही ने सोंचा, आज तक इस तरह उसे उसकी अपनी ज़ुबान में किसी ने नहीं पुकारा और फिर पुकारता भी कैसे? अभी कुछ साल पहले तक, सरे का यह इलाक़ा मिचम, 'कंट्री-साइड' अंग्रेज़ों का रिहाइशी इलाक़ा हुआ करता था। यहाँ सिर्फ़ गोरे रहते थे, क्यों कि इस छोटे से कस्बे में किसी पब्लिक ट्रांसर्पोट्र की सुविधा नहीं थी। कोई फैक्टरी नहीं थी। कोई बड़ा बाज़ार नहीं था। कोई बड़ा दफ़्तर नहीं था। कोई एयरपोर्ट नहीं था। जो किसी इमिग्रेंट परिवार को आर्कषित करे। और यह आवाज़, यह पुकार....लगता है उसे ग़फ़लत में सुनाई दिया। कल अम्मा की चिट्ठी आई थी न, बस रात वह बिना वीज़ा, बिना टिकट, एयरलाइन को चूना लगाते हुए फैज़ाबाद हो आई थी। लगता है सपने का खुमार अभी भी उस पर हावी है शायद इसीलिए उसके कानों को यह पुकार 'सुनिए' जैसा लगा होगा। परदेस में देश की याद भी तरह-तरह से भरमाती है।

यही सब सोचते हुए जूही ने पलट कर देखा,

गंदुबी चेहरे पर बड़ी-बड़ी शरबती ऑखों वाली अनगढ़, पर ज़रा गुदाज़ बदन की बीस-इक्कीस वर्ष की लड़की, हरे रंग की छींटदार सलवार-क़मीज़ में हैरान-परेशान पर बेहद सुरीली आवाज़ और आत्मीय ढंग से उसे पुकार कर कह रही थी,

'देखिए! आप शायद यहीं कहीं रहती हैं। मैं रोज़ सुबू-सुबू आपको इसी रस्ते पे आते-जाते देखती हूँ। हफ़्ता हुए, पाकिस्तान के मीरपुर इलाके से हवाई जहाज में बैठ कर यहाँ आई हूँ।'

उसने चेहरे पर गिर आए लटों को बेपरवाही से कानों के पीछे जल्दी से खोंसते हुए अपने घर के खुले दरवाज़े पर नज़र रखते हुए कहा,

'मुझे इस मुल्क़ के बारे में कुछ बी नई मालूम। बड़ी घबराहट होती है। कई बार दिल में हौल उठता है। ज़ेबा का दिल तो घर के अंदर बिल्कुल बी नई लगता है। मेरा खाविंद सुबू-सुबू काम पर निकल जाता हैं फिर रात देर में आता हैं। पास-पड़ोस में भी अपना कोई नहीं रएता है जिससे दो बातें करूँ। सारा महौल सांय-सांय करता है। मीरपुर में तो खुले दरवाज़े होते हैं। हर वक़्त लोग आते-जाते रएते हैं। ज़ेबा दिन भर ऐसे ही पास पड़ोस में खेलती रएती थी। अब यहाँ वो उकता जाती है।'

जूही के पास समय नहीं था। इतनी सब बाते सुनने में उसके तीन मिनट खर्च हो गए। साढ़े आठ पर उसे स्कूल पहुँचना है। क्या करे वह? वह हैरान-परेशान लड़की उसे बिल्कुल अपनी सी लगी, उसके बात-चीत का सलीक़ा, उसकी घबराहट, उसकी परेशानी, उसके होठों के मुड़ने

और सिकुड़ने का अंदाज़, उसके ऑखों की बेचैनी, उसके मन के अंदर एक अजब से अपनत्व का भाव उत्पन्न कर रही थी। उसका मन किया, वह ठहर कर उसकी बातें सुने.... पर जल्दी है आज उसकी प्ले-ग्राउंड ड्यूटी भी है। उसने लड़की की ओर देखा, लगा, वह रात भर सो नहीं पाई थी। उसकी ऑखों में लाल डोरे उभर आए थें। शायद घर की याद आती रही होगी! पता नहीं किस-किस को पीछे छोड़ कर आई होगी। जूही के अंदर ममता ने हिलोंरें ली। तभी खुले दरवाज़े में अलसाई सी अँगूठा चूसती घुंघराले लंबे बालों वाली चार-साढ़ेचार साल की स्कूली-उम्र की गोल मटोल, पीले-हरे सलवार-क़मीज़ में खड़ी बच्ची दिखी फिर उसके पीछे एक और नन्हां-मुन्ना गोल-मटोल बच्चा खड़ा दिखाई दिया। जूही को बच्चे पसंद हैं इसलिये ही तो उसने रिसेप्शन क्लास का चार्ज लिया है वर्ना उसकी योग्यता तो कॉलेज में पढ़ाने की है।
जूही ने लड़की के चूड़ियों से भरे नर्म गुदाज़ हाथो पर हाथ रखते हुए, उसकी तसल्ली के लिए कहा,
'देखो इस समय मैं ज़रा जल्दी में हूँ मुझे साढ़े आठ बजें स्कूल पहुँचना है। मैं तकरीबन साढ़े चार बजे शाम को इधर से गुज़रुंगी, तब तुमसे तफ़सील से बात करुंगी। तुम यहीं गेट पर मुझे मिलना...ठीक।'
'ओह! तो आप उस्तानी हैं। जी मेरा नाम सबीना है। आप मेरी ज़ेबा यानी तनज़ेब को भी स्कूल में दाख़िल करले। आप उसे इल्म दें। मैं तो निरी जाहिल निपट-गँवार हूँ। मुझे आपकी मेहर चाहिए।' कहते हुए उसने बडे अदब से सिर झुँका कर दुप्ट्टा संभालते हुए आदाब किया, तो कानों में पड़ी बड़ी-बड़ी चाँदी की बालियाँ उसके दुप्ट्टे से उलझ गई।
जूही हँस पड़ी, उसके लुभावने अख़लाक पर, उसके बच्चों जैसे प्यारे-भोले व्यवहार पर।
'हाय अल्ला!' कहते हुए वह घर के अंदर भागी, बड़ीवाली नटखट बच्ची शरारतन धड़ाक से दरवाज़ा बंद करने ही जा रही थी कि उसने अपना दाहिना पैर दरवाज़े और दहलीज़ के बीच अड़ा दिया।
'हाय! ज़ेबा तूने तो मुझे मरवाई दिया होता! फिर उसने झपटकर, उसे पीछे ठेलते हुए, फ़र्श पर गिर पड़े बच्चे को गोद में उठा कर चूमा और जूही को हाथ हिला कर खुदा हाफ़िज किया, पर जूही तब तक गार्डेन एवेन्यूँ में मुड़ चुकी थी।
जूही का स्कूल यानी बीचहोम प्राइमरी स्कूल, गार्डन एवेन्यू के दूसरे मोड़ पर बीच और बर्च के खूबसत पेड़ों के बागीचे में बना हुआ था। स्कूल के प्लेग्राऊँड में भी बहुत सारे चँदीले, हरे और ताँबई रंग के बीच और बर्च के बृक्ष लगे हुए थें। बच्चे प्ले ग्राऊंड में हुल्लड़ मचाते हुए स्लाइड, खेल-घर, झूले, साँप-सीढ़ी, सी-सॉ, और लकड़ी के बने दुर्ग में खेल रहे थे। कुछ बड़े बच्चे झुंड में खड़े कल टी.वी. पर देखे गए 'सिक्स मिलियन डालर मैन' के करतबों के बारे में ऑखें मटका-मटका कर बातें कर रहे थे। कुछ लड़के-लड़कियाँ 'बार्बी डॉल' और 'इनक्रेडिबुल हल्क' के चर्चे में मशगूल थें। हुड़दंगे और दादा किस्म के बच्चे जो किसी कमज़ोर बच्चे को छेड़ रहे थें जूही को देख कर भोले-भाले बन, अन्य बच्चेां को लाइन में खड़े होने की सलाह देनें लगे। कई माँ-बाप जूही को देखते ही, उसे गुड मानिंग करते हुए, बच्चों को ग्राऊँड में छोड़ कर वापस जाने को मुड़े। सुबह के वक्त सभी जल्दी में होते हैं। अभी आठ सत्ताईस हुए थे।

'वेल इन टाइम।' सोचते हुए जूही ने माथे का पसीना टिश्यू से पोछा। और बच्चों को गुडमार्र्निंग करते हुए पर्स से ह्विाि़सल निकाल कर गले में डाला। जुलाई का महीना था। सूरज की किरने गर्मी फेंक रही थीं। ठीक आठ तीस पर जूही ने व्हिसिल बजा दी।

सीटी बजाते ही सभी क्लास टीर्चस अपनी-अपनी कक्षाओं को प्ले-ग्राऊंड से आकर ले गईं। जूही अपने क्लास के साथ थोड़ी देर और प्ले-ग्राऊँड में देर से आने वाले बच्चों के लिए खड़ी रही। इस बीच रिसेप्शन क्लास के बच्चे लाइन तोड़ कर उसके चारों ओर झुंड बना कर खड़े हो गएं। कई बच्चे उसके हाथ, पर्स, ह्विसिल और कपड़ों आदि को छू कर उसका ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित करने लगें। बच्चे अपने मन की बातें उसे बताने को अधीर हो रहे थें। जूही सोंच रही थी, आज-कल माँ-बाप अपने कैरियर बनाने में इतने लिप्त हो जाते हैं कि उनके पास इन नन्हें-मुन्नों की बाते सुनने का समय ही नहीं होता। बच्चों के प्रति अपनी सारी जिम्मेवारी वे स्टेट के ऊपर छोड़ कर खुद अपने व्यक्तिगत रुचियों और विकास के होड़ में लग जाते है। खा़सतौर पर पचासवीं और छठवीं दशक में जन्में माता-पिता सिर्फ बच्चे पैदा करने का शौक़ रखते है। बच्चों के प्रति उनका कुछ उत्तरदायित्व भी है वह नहीं जानतें। वास्तव में यह सब 'वेल फेयर स्टेट' की क़रामात हैं। देखा जाए तो आज-कल स्कूल-टीर्चस आधी सोशल वर्कर और नर्स होती जा रही है।

यूँ जूही को बच्चे पसंद हैं इसीलिए वह रिसेप्शन क्लास लेती है वर्ना डेपुटी हेड होने के नाते उसे ऊँची कक्षा के बच्चों को पढ़ाना चाहिए। वह बच्चो कों ले कर कक्षा में आई, एक नज़र उसने क्लास के 'ले-आउट' पर डाली फिर संतुष्टी के साथ अपनी उस नन्हीं-सी कुर्सी पर जा बैठी जिस पर बैठ कर वह रोज़ बच्चों का रजिस्ट्रेशन लिया करती है।

रोज़ की तरह कल शाम भी वह बच्चों के ज़रूरत के मुताबिक क्लास को आयोजित कर के घर गई थी। सैंड-टेबुल, वाटर-ट्रे, पेन्टिंग ईज़ल, जंक-मॉडलिंग, कटिंग-पेस्टिंग, नंबर और रीडिंग टेबुल सब बच्चों के आवश्यकतानुसार तैयार थें। उसने संत्ो्ष से ऑंख उठा कर एक बार फिर पूरे क्लास का निरीक्षण किया। बच्चे कक्षा में आते ही 'स्टोरी कार्नर' में रजिस्ट्रेशन के लिए बैठ गएं। जूही नाम पुकारते हुए बच्चों के चेहरे और उनके उत्तर देने के अंदाज़ से उनके मूड का अंदाज़ लगाती जा रही थी। उसके पाँचों इंद्रियाँ वर्तमान वस्तु स्थिति के मूल्यांकन में लिप्त हो गए। फिर भी इन तमाम व्यस्तता के बीच भी वह सुबह दरवाज़े पर खड़ी नटखट शरबती ऑंखोंवाली नन्हीं सी गोल-मटोल नटखट ज़ेबा को भूल नहीं पाई।

इस छोटे से शहर मिचम में जब भी कोई बच्चे वाला नया परिवार आता है तो स्कूल की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। क़ानूनन स्कूली-उम्र के बच्चों का रजिस्ट्रेशन स्कूल में फ़ौरन हो जाना चाहिए। ज़ेबा अभी 'प्री-स्कूल ऐज' की है इसलिए उसे रिसेप्शन क्लास में डाला जाएगा। अतः उसने आज ही बच्चों को ज़ेबा का परिचय एक कहानी की तरह देना उचित समझाा।

वैसे भी आमतौर पर वह दिन का आरम्भ किसी न किसी कहानी से शुरू करती है क्योंकि दिन का सारा कार्यक्रम उसी कहानी के इर्द-गिर्द बुना जाता है। आज का कार्यक्रम निश्चित करने के लिए उसने जेंबा की कहानी सुनाई, जिसका रंग सूरज की गर्मी से पका हुआ सुनहरा था, जो कोई और भा्षा बोलती थी, जो और किसी और तरह के कपड़े पहनती थी, जो किसी और तरह के खाने खाती थी, जो और किसी और देश से आई थी। उसने बच्चो को उस गंदुंबी रंग की लड़की की काल्पनिक तस्वीर ईजल पर बना कर दिखाई, जिसके लंबे-

घ्ुाांघराले बाल उसके घुटनों को छूते थें। जिसकी ऑंखें शरबती रंग की थीं। बच्चों को कहानी खूब पसंद आई। उन्हें ज़ेबा परी देश से आई लगी।

चूँकी पहले मिचम एक छोटा-गाँव हुआ करता था अतः अधिकांश बच्चों का संपर्क अभी तक एशियन और अफ्रीकन बच्चों से नहीं हुआ था। बच्चे जूही के सॉवले रंगत से ही हमेंशा चकित रहते थें। वे अक्सर उससे पूछते,

'मिस, सी-साइड से आने के थोड़े ही दिनों बाद हमारी टैनिंग (धूप से साँवली पड़ गई रंगत)उतर जाती है पर आप हमेंशा कैसे इतनी टैंड रहती है। बच्चों को पिगमेंट (रंग ग्रंथि) आदि जैसी बारीकियाँ समझ नहीं आतीं।' वह मुस्करा कर उन्हें कुदरत की देन के बारे में बताती, अपने देश हिंदुस्तान के बारे में बताती, जहॉ लोग सुनहरे और सॉवले रंग के होते हैं। ....बच्चे उसे हैरत से देखते।

.....

लंच-ब्रेक पर जब वह स्टाफ़-रूम में पहुँची तो वहाँ भी पार्क एवेन्यू में आए इस नए परिवार की ही चर्चा हो रही थी। जुही के स्टाफ़ रूम में प्रवेश करते ही हेडमिस्ट्रेस जिलियन डेविस ने उससे पूछा,

'जूही क्या तुम पार्क एवेन्यू में आए उस इंडियन परिवार के बारे में जानती हो, जो पिछले हफ्ते मिसेज कुक के पड़ोस में आया है।' जूही ने फ्रिज में से अपना लंच निकालते हुए कहा,

'निःसंदेह, जिलियन इसीलिए तो आज मुझे स्कूल आने में कुछ देरी हो गई। उसी परिवार के बारे में मैं तुमसे कुछ विचार-विमर्श करना चाहती थी। पर तुम्हें तो पहले ही उनके बारे में काफ़ी कुछ पता चल गया। वास्तव में आज सुबह उसी महिला ने मेरा रास्ता रोक लिया था। वह लोग इंडिया के नहीं वरन पाकिस्तान के किसी बहुत छोटे से गाँव के रहने वाले हैं। घर में दो बच्चे है बड़ी लड़की चार-साढ़े चार साल की है दूसरा अभी छोटा है। वो लोग उर्दू बोलते है। उन्हें न तो यहाँ के रीति-रिवाज़ पता है न भाषा।'

'ओ गॉड! फिर तो बच्ची को स्कूल में बहुत दिक़्कत होगी। पता नहीं उसके आने पर बच्चे कैसी प्रतिक्रिया देंगे। अगर बच्ची शर्मीली हुई तब तो और समस्या होगी! यूँ वह नन्ही बच्ची तो तुम्हारे ही रिसेप्शन क्लास में आएगी। क्या तुम उसकी ज़बान समझ सकती हो, अन्यथा हमें हेडक्वाटर से विशेष सहायता लेनी होगी।'

जूही ने मुस्कराते हुए जिलियन के कंधे को थपथपाते हुए कहा, 'जिलियन चिंता की कोई बात नहीं मैं उनकी भाषा बोल सकती हूँ। बोल-चाल की भाषा हमारी एक ही है। हिन्दी और उर्दू बोल-चाल में कोई खास फ़र्क नहीं है। पर उर्दू लिपि मैं नहीं पढ़ सकती हूँ। वह अरबी लिपि की तरह दाहिनी ओर से लिखी जाती है।' इतना सब कुछ जूही ने सिर्फ़ जिलियन को आश्वस्त करने के लिए कहा,

'वैसे भी हम पड़ोसी देश के हैं फिर भी हमारे विचारों और सोंच में काफ़ी अंतर है। वास्तव में पाकिस्तान 1947 से पहले भारत का ही एक हिस्सा था। भारत की स्वतंत्रता के समय देश का बटवारा हुआ था। पर वह सब राजनीतिक बातें हैं....अब सारे अर्थ बदल गएं हैं।' जूही को उसका पूर्वाग्रह घेरने लगा तो उसने चुप हो जाना ही ठीक समझ।

'ओह फिर तो ठीक है। हमारी चिंता दूर हुई। वैसे भी बच्चे बहुत जल्दी घुल-मिल जाते है। मुश्किल तो हम बड़ों के साथ है। हमलोग ही पूर्वाग्रह से घिरे होते हैं। तुम अगले सप्ताह

गर्मियों की छुट्टियों से पहले मार्ग्रेट के साथ रजिस्ट्रेशन फ़ार्म, स्कूल-रूल्स, छुट्टियों के डेट्स, स्कूल यूनिफार्म, सिलेबस आदि की कॉपी उन्हें दे देना और मार्ग्रेट से उनका परिचय भी करा देना।'

मार्ग्रेट, स्कूल सेक्रेटरी, जो वही पास खड़ी सारी बाते सुन रही थी। कुछ नर्वस सी हाथ हिलाते हुए बोली,

'नहीं-नहीं, जिलियन, मुझे तो उनकी भाषा भी नहीं आती है। मैं भला जा कर क्या क्रुंगी। जूही उनसे सारी बातें कर लेगी। उस पाकिस्तानी या जो कुछ भी है उस लड़की को उसके ही क्लास में तो आना है। फिर जूही उन्हें जानती भी है। मुझे घबराहट हो रही है। मैं तो उनके तौर-तरीक़ों से भी वाक़िफ नहीं हूँ।'

बाक़ी का लंच करता स्टाफ़ काना-फूसी करते हुए जूही, जेनिफ़र और मार्ग्रेट की बातो का मज़ा उठा रहे थें। जूही को याद आया, पहले दिन जब वह साड़ी पहने स्टाफ़ रूम में आई थी, जेनिफ़र स्टाफ़ से उसका परिचय करा रही थी, उस दिन भी स्टाफ़ की यही प्रतिक्रिया थी। उसकी नियुक्ति से कुछ लोग नर्वस थे, कुछ नाखुश, और कुछ लोग प्रसन्न थे। सबके अपने अपने कारण थे। शुरू के दिनों में कुछ लोग उसे विशेष सहयोग देते और कुछ लोग उसको असफल बनाने के प्रयास में लगे रहते। जेनिफ़र कुशल प्रबंधक थी। वह अपने स्टाफ़ की मनोवृति से परिचित थी, अतः वह जूही के लिए सदा सावधान रही।

जूही ने अपनी योग्यता, हाज़िर-जवाबी, हँसमुख स्वभाव और अच्छे संस्कारों से धीरे-धीरे सबसे तालमेल बैठा लिया। और जब उसका नाम डेपुटी-हेड के लिए प्रस्तावित हुआ तो किसी ने अड़ंगा नहीं लगाया क्यों कि तब-तक वह हर तरह से उस पद के लिए अपने-आप को योग्य साबित कर चुकी थी। 'आल-ह्ववाट' स्कूल में एक काले नस्ल की टीचर डेपुटी-हेड की हैसियत से काम कर रही हो यह बात दक़ियानूस लोगो के समझ में अभी भी नहीं आती। और अब उसी स्कूल में एक काले नस्ल की बच्ची पढ़ने आ रही है और वह भी एक निरक्षर परिवार से तो हल-चल तो होगा ही, उसने सोंचा।

मुहल्ले के सभी लोग इस नए परिवार के अपरिचित विदेशी भदेसपने से घबरा कर नर्वस हो रहे थे। जिलियन ने उसी समय जूही से अगले स्टाफ़ मीटिंग के लिए एशियन कल्चर, परिवार, रहन-सहन, और भाषा आदि पर एक परिचयात्मक इनसेट (इन सर्विस ट्रेनिंग) अभिवाविकों और शिक्षकों आदि के लिए तैयार करने के लिए कहा। मिचम इनर-लंदन से जुड़ने जा रहा है साथ ही चॉकलेट और केक आदि बनाने की एक मल्टी-नेशनल फैक्टरी भी मिचम में लगने जा रही है। मिचम जल्दी ही एक बहुसांस्कृतिक शहर बनेगा। ऑफिस से संदेश भी आ चुका था। स्टाफ़ और बच्चों के अभिवावकों को इसके लिए तैयार करना होगा, तभी मिचम का सामाजिक परिवेश संतुलित रह पाएगा। सोचते हुए जिलियन ने अपना लंच-बॉक्स टेबुल पर रखते हुए जूही से कहा,

'हाँ ऐसा ही कुछ मुझे भी पता चला है। ये लोग टोनी के पड़ोस में आए हैं। टोनी की माँ, मिसेज़ पिर्यसन बता रही थी। इस परिवार को यहाँ के तौर-तरीक़े बिल्कुल नहीं पता है। वो लोग घर का कूड़ा अपने बैक गार्डेन में फेंकते है और गार्डेन की घास जंगली हो रही है। गंदे दूध के बोतलों का ढेर घर के बाहर लगा हुआ है। पास-पड़ोस के लोग भिन्ना रहे हैं, पर तुम्हें

तो मिसेज़ पीर्यसन के स्वभाव का पता ही है, वह या तो किसी को आसमान पर चढ़ा देती है या पाताल में ढकेल देती है।'

जूही खुसपुसाते स्टाफ़ की ओर देख कर हँसते हुए बोली,

'जिलियन, हर-जगह कुछ ऐसे नर्वस और असुरक्षित लोग होते हैं जो किसी भी बदलाव पर बौखला जाते है। पर अगर ऐसे लोग दुनियाँ में न हों तो यह संसार बिल्कुल नीरस हो जाएगा।'

टोनी की माँ सोसाइटी ऑंटी है। पड़ोस में कोई आए और वह उसे पूरे मुहल्ले का कच्चा-चिट्ठा न बताए, ऐसा कैसे हो सकता है? सबीना यूँ ही डरी और घबराई हुई थी, जब उसने टोनी की माँ, एक अंग्रेज़ औरत को बिलावजह अपने घर की तरफ़ आते देखा तो वह डर और घबराहट से बच्चों सहित, धड़कते दिल को संभालते हुए, घर के अंदर जा बैठी। टोनी की माँ ने अपने आप को अपमानित महसूस किया। अतः वह सबसे उस परिवार की बेवकूफ़ियों और गँवारपने की बातें हाथ और ऑंख मटका-मटका कर बताती फिर रही थी।

शाम को घर लौटते समय सबीना और ज़ेबा दोनों ने जूही को घेर लिया। सबीना इसरार कर के उसे घर के अंदर ले गई और चाट-पकौड़े खिला कर उसका स्वागत करते हुए उसे देर तक अपनी तमाम परेशानियों और जाती मसलों से वाकिफ़ कराती रही। साथ ही इतनी सी देर में उसने जूही से आपा का रिश्ता भी जोड़ लिया जो जूही को अच्छा लगा। उसने सोंचा, इस दुनिया में अगर कोई रिश्ता सबसे पुरसुकून और निर्दोष रिश्ता है तो वह है प्यार का रिश्ता। और यह रिश्ता पल भर में क़ायम हो जाता है। इसके अलावा दुनिया में और ना तो कोई दीन है न मज़हब।

दो तीन मुलाक़ातो के बाद ही सबीना ने उसे बताया उसका मियाँ ज़फ़र तक़रीबन उससे पंद्रह साल बड़ा है। वह विम्बुल्डन पार्क के मसजिद में निमाज़ पढ़वाने का काम करता हैं। पैसे कुछ खास नहीं मिलते हैं पर गुज़र हो रही है।

जूही भी सबीना को ब्रिटेन के रहन-सहन के बारे में मोटी-मोटी ज़रूरी बातें बीच-बीच में बताती रही। यूँ भी जूही सबीना के विचारों, उसकी मानसिकता और उसके परिवेश को अच्छी तरह जान और समझ लेना चाहती थी ताकि ज़ेबा जब स्कूल आए तो वह उसे अच्छी तरह स्कूल के परिवेश में शामिल कर सके।

सबीना से बातें करते हुए जूही को शुरू-शुरू के अपने वे पुराने दिन याद आएं जब उसने स्कूल में पढ़ाना शुरू किया था। इंटरव्यू से पहले जब जिलियन उसे स्कूल दिखा रही थी तो उसने नोट किया कि बच्चे उसे बड़ी उत्सुकता से देख रहे थें। वह बच्चों कें बीच बैठ गई और क्लास में हो रही 'एक्टीविटीज़' में शामिल हो गई। बस वही उसका इंटरव्यू हो गया और उसी समय उसकी नियुक्ति हो गई। कई दिनों तक तो उसे यक़ीन ही नहीं आया कि उसे लंदन के स्कूल में बिना किसी रिगमा-रोल, बिना किसी सिफ़ारिश के नौकरी मिल गई। बस बच्चों ने उसे पसंद कर लिया और जिलियन ने पल भर में उसके विशेष शिक्षण-संभावनाओं को पहचान, उसी क्षण उसे अपने स्कूल में नियुक्त कर लिया।

फिर जब उसने क्लास लेना शुरू किया तो उसे पता चला कि यहाँ की शिक्षा पद्धति तो विल्कुल अलग किस्म की है। शुरू में वह अपने आप को अन्य अंग्रेज शिक्षकों के मुकाबले कई माइनों में बेहद कमज़ोर पाती थी क्यों कि उसे अंग्रेज़ी बाल-साहित्य, धार्मिक त्योहार,

उत्सव आदि मनाने के उनके तरीक़ो के साथ उनके देश की बनस्पति, मौसम, रोजमर्रा के जीवन, सदियों पुरानी सभ्यता से जुड़ी विशेष भोजन, जीवन-मरण के अवसर आदि संस्कारो और रीति-रिवाज़ों का ज्ञान नहीं था। धीरे-धीरे उसने अपनी कमियों पर विजय पाने के लिए शाम को वयस्क शिक्षा की कक्षाओं में जाना शुरू कर दिया। उसकी मेहनत रंग लाई और उसने जल्दी ही अंग्रेज़ी सभ्यता, शिक्षण पद्धति और उसके दिन-प्रति-दिन की सोंच और रहन-सहन की बारीकियो पर अपनी पकड़ मज़बूत बना ली।

इधर शाम को घर जाते समय अक्सर सबीना उसे पकड़ लेती थी। एक दिन उसने जूही को बताया, जफ़र गोरों से सख़्त नफ़रत करता है। उसने उसे सख्त हिदायत दे रखी है कि वह गोरों से बिल्कुल दुआ-सलाम न करे। गोरे अल्लाह के बंदे नहीं हैं और न ही उनका कोई दीन है। जूही उसकी अनगढ़ बेबाक़ और भोली बातों की गहराई और उसके संदर्भ को समझते हुए बस हाँ-हूँ करती, सुनती रहती। 'यह कमसिन लड़की तो बिल्कुल ही किसी ठेठ गाँव से उठा कर यहाँ लाई गई है इसे दुनियाँ-जहान के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है। अतः वह उसके किसी भी बात पर कोई टिप्पणी करना उचित नहीं समझती।

बातों ही बातों में एक दिन सबीना ने उसे कुछ शरमाते हुए बताया कि वह फिर पेट से है.... फिर वह कुछ दुःखी और परेशान सी बोली, पहले ही ज़ेबा और अल्ताफ़ उससे नहीं संभलते। अब यह और मुसीबत! उसका मन न होने पर भी ज़फ़र उससे ज़बरदस्ती कर डालता है और फिर यह ज़ेबा दिनों दिन और शरारती होती जा रही है। अल्ताफ़ को बिलावजह तंग करती-रहती है। न तो खुद सोती है और न किसी को सोने देती है। सुबह-सवेरे उठ बैठती है। हर वक़्त बाहर जाने की ज़िद करती है। ज़फ़र, घर की औरतों के बाहर जाने के बिल्कुल खिलाफ़ है। उसका गुस्सा बेहद तेज़ है। कहता है अगर उसने बाहर पैर निकाला तो वह उसे मीरपुर भेज देगा।' कहते-कहते वह घबरा उठी और उसकी ऑखों में ऑसू झलक उठें।

ऐसे ही एक दिन सबीना ने जूही से कहा, 'आपा, अगर आप ज़ेबा को अपने स्कूल में दाखिल कर ले तो मेरी परेशानियाँ कुछ कम हो जाएंगी। हमलोगों के पास ज़्यादा पैसा नहीं है। हम फ़ीस नहीं दे पाएंगे। आप ज़ेबा की फीस अगर माफ़ कर दें तो हम पर बड़ा एहसान होगा।'

जूही ने सोंचा यह अच्छा हुआ, सबीना ने ख़ुद ज़ेबा की पढ़ाई की बात उठाई है। अब वह इस विषय पर उससे खुल कर बात कर सकती है। उसने सबीना से कहा,

'हाँ, सबीना, कई दिनों सें मैं तुम्हें यह बताना चाह रही थी कि इस देश में पाँच साल से ऊपर के बच्चो को घर में रखना ग़ैरकानूनी है। अगर ऐसा कोई करता है तो उसे सज़ा मिलती है और बच्चे को पुलिस ले जाती है और फिर सोशल-वर्कर उनकी देख-भाल करती है। बच्चे को वापस लेने के लिए कोर्ट-कचहरी जाना पड़ता है। ज़ेबा अभी पाँच की नहीं हुई है इसलिए अभी तुम्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है।'

'हाय रब्बा! अच्छा हुआ आपा आपने मुझे पएले ही बता दिया वर्ना तो हम बड़ी मुसीबत में पड़ जाते।' कहते हुए उसने ज़ेबा को अपने सीने से लगा लिया।

जूही ने उसे समझााया,

'देखो अभी घबराने की कोई बात नहीं है। कल शाम मैं स्कूल-सेक्रटरी के साथ तुम्हें सब ज़रूरी कागज़ात दे जाऊँगी और साथ ही उनके बाबत तफ़सील से बता भी दूँगी। हमारा स्कूल सरकारी है और इसमें बच्चों की कोई फ़ीस नहीं लगती बल्कि बच्चों को स्कूल में किताब,

कॉपी, पेन्सिल, रबर, दूध और खाना मुफ्त में मिलता है। अगर माँ-बाप की तन्ख़्वाहें कम हैं तो बच्चों को कपड़ों और जूतों के लिए भी मदद मिलती है।'

'अल्ला, ये तो और अच्छी बात है आपा, आप मेहरबानी कर के ज़ेबा का नाम अपने स्कूल में लिखा दीजिए। मैं ज़फ़र को मना लूँगी। एक बात और है आपा, जफ़र को बी अंग्रेजी नई आती वो फ़ारम कैसे भरेगा।'

'अरे हाँ, वह तो मैं भूल ही गई, फ़ॉर्म ले कर तुम लोग अगले हफ्ते स्कूल आ जाना, अगर मैं खाली रही तो तुम लोगों का फ़ॉम वगैरह भरवा दूँगी वर्ना एजूकेशन ऑफ़िस से मिसेज़ पटेल को बुला लेंगे उन्हें हिन्दी आती है। तुम्हें जेबा के साथ आ कर स्कूल भी देखना होगा और जानना होगा कि यहाँ स्कूलों में पढ़ाई वग़ैरह कैसे होती है।'

'हाय बाजी मैं उन औरतों की जुबान कैसे समझुंगी। ज़फर तो वैसे बी घर नई होंगा।'

'देखो मिसेज़ पटेल वहाँ होंगी, वह तुम्हें हिन्दी में सब कुछ समझा देंगी।।'

'पर आपा मुझे तो हिन्दी बी नई आती।' वह हैरान-परेशान-सी दुप्पटे से माथा सहलाते हुए बोली,

'सबीना तुम्हें हिन्दी नहीं आती क्या कह रही हो? मैं तुमसे हिन्दी में ही तो बोल रही हूँ।' जूही उसके मासूमियत और नासमझी पर मुस्करा कर बोली।

'नई आपा, आप तो उर्दू बोल रई है।' सबीना ने चकित हो कर कहा।

'नही सबीना मैं तुमसे हिन्दी में ही बात-चीत कर रहूँ बस वह हम दोनों के नज़रिए का फ़र्क है बिल्कुल बैसे ही जैसे हम-तुम दोनों औरतें हैं। तुम पाकिस्तान की हो और मैं हिन्दुस्तान की।

'अल्ला, क्या आप सच कए रईं हैं आपा!'

'हाँ, सबीना यह सच है। हम-दोनों संस्कृत और फ़ारसी से निकली भाषा बोलते है, पर हम लिखते ज़रूर उर्दू कायदा या हिन्दी वर्णमाला में, जिसे अंग्रेज़ी में अल्फ़ाबेट कहते है।

अगले हफ्ते सबीना और ज़ेबा के साथ ज़फ़र भी स्कूल आया। ज़ेबा को दूध, लंच, किताब, कपड़े और फीस वगैरह मुफ्त में मिलेगा, इस बारे में वह पूरी तरह से मुतमइन हो जाना चाहता था।

गर्मी की छुट्टियों के बाद ऑटम-टर्म में ज़ेबा स्कूल आने लगी।

ज़ेबा बड़ी दिलचस्प, भोली, निर्भीक और खूबसूरत बच्ची थी। पहले ही दिन जब स्कूल आई तो हर किसी ने उसे हसरत और प्यार से देखा। वह स्कूल आते ही हर किसी से अपने नन्हें-नन्हें खूबसूरत हाथ और बड़ी-बड़ी शरबती ऑंख मटकाती-नचाती बड़े दिलक़श आंदाज़ में, धड़ल्ले से उर्दू में बातें करती। उसे यह समझ नहीं थी कि उसकी भाषा कोई समझ नहीं रहा है। वह इतनी भोली और दिलचस्प थी कि लोग बस मुस्करा कर, सिर हिला कर, ऑंखें इधर-उधर नचा-घुमा कर अंदाज़ से उसकी बात समझ कर, उसकी ज़रूरतें पूरी कर देतें। ज़ेबा क्लास की हर चीज़ बड़े ध्यान से देखती, छूती और उसके इस्तेमाल करने के तरीक़े जानने-समझने की कोशिश करती। दोस्ती करने के उसके तरीक़े बड़े दिलकश और प्यारे थें। अगर कभी कोई बच्चा उसी खिलौने से खेलना चाहता जिससे वह खेल रही होती तो वह उसे बिना ना-नुकर के वह खिलौना देकर खुद किसी और चीज़ से खेलने लग जाती। उसके लंबे बालों

और शरबती ऑंखों के जादू में बंधे क्लास के तमाम अंग्रेज़ बच्चे चकित, उसका चेहरा देखते रहतें। वह जो कुछ बोलती उसे वे उसकी तोतली जुबान समझते और उसे बच्चा समझ कर उसकी सारी मंशाएं पूरी कर देते। उधर ज़ेबा समझती उसके क्लास के सारे बच्चे अल्ताफ़ जैसे है वे उसी की तरह फशां-फशां और गा-गा करते है। पर एक-दो दिन में ही ज़ेबा को समझ आ गया कि ये बच्चे फंशा-फशां नहीं करतें बल्कि एक नई ज़ुबान बोलते है जिसे अंग्रेज़ी कहते हैं।

ज़ेबा ने घर जाने से पहले एक दिन जूही से पूछा,

'मिस शामा आपको गोरों की जुबान कैसे आती है? आप तो हमारे मुल्क की हैं।'

जूही ने हँसते हुए ज़ेबा को दाहिने हाथ के घेरे में लपेटते हुए कहा, 'जब मैं तुम्हारे जैसी छोटी थी तो रोज़ स्कूल जाती थी। क़िताबें पढ़ती थी। बच्चों के साथ खेलती थी। टी.वी देखती थी। बस ऐसे ही उनके साथ खेलते-खेलते आगई अंग्रेज़ी।'

'अगर मैं रोज़ स्कूल आऊं और बच्चों के साथ खेलूँ तो मुझे भी अंग्रेज़ी आ जाएगी।'

'और क्या? अपने आप धीरे-धीरे आ जाती है अंग्रेज़ी। और तुम्हें तो अंग्रेज़ी आनी शुरू हो गई है। अभी तो तुम कह रही थी,

'माई बुक, माई बुक थ्री बेयरस, मिस शामा।'

'अरे हाँ यही तो कहा था मैंने!' वह खुशी से चिल्लाई

'और क्या अंग्रेज़ी कहीं बाहर से थोड़ी न आती है। दोस्तों के साथ खेलने से आती है।'

और वह जूही से इस तरह लिपटी जैसे कोई बच्चा अपनी माँ से लिपट जाए।

बस ज़ेबा और जूही के बीच एक पुरसुकून रिश्ता क़ायम हो गया। जूही ज़ेबा की दोस्त बन गई। कई बार ज़ेबा अपने हिस्से की सिमइयाँ और शीरनी सबीना से छिपा कर चँदीले फ़ायल में लपेट कर लाती। सबीना उसे देख कर मुस्कराती और चुपचाप जूहीके कान में कहती,

'आपा, आज फिर आपको अपनी जूठन खिलाने को लाई है।' और वह चुपचाप उसकी मेंज़ की दराज़ में एक छोटा सा कटोरदान जेबा की नज़र बचा कर रख देती। जूही माँ-बेटी दोनों के प्यार से खुद खुश्क़िस्मत समझती।

ज़ेबा में ग्रंथि-हीन संतुलन था। वह जल्दी ही कोड मिक्सिंग करने लगी। शुरू में वह उर्दू के बीच अंग्रज़ी के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करने लगी और फिर जब अंग्रेजी के वाक्य बनाने आगए तो उसमें उर्दू के शब्दो को घड़ल्ले से जोड़ देती। उसे बच्चों को अपनी बात समझाने में कभी भी कोई दिक्कत नहीं आई। बच्चों को भी ज़ेबा बेहद पसंद थी इसलिए वे उसके हाव-भाव से उसकी बातें समझ जातें।

छः महीने में ही ज़ेबा रोज़मर्रा वाली अंग्रेज़ी बोलने लगी थी। कई बार जब जूही किसी और काम में व्यस्त होती तो ज़ेबा अक्सर उसकी कुर्सी पर बैठ, ठीक उसकी ही तरह बच्चों से बाते करती या कॉपी ले कर बच्चों का रोज़नामचा भरने का नाटक करती। और सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि बच्चे भी उसकी बात वैसे ही मानने का नाटक करतें जैसे वह जूही की बातें मानते। ज़ेबा की आवाज़ बेहद सुरीली थी वह अक्सर खिलौने वाला गिटार बजा-बजा कर हिन्दी-अंग्रेज़ी गाने गाती और बच्चे तन्मय उसके गीत सुनतें। वास्तव में नन्हीं ज़ेबा का व्यक्तित्व जादूई था। वह अक्सर 'प्ले हाउस' में अन्य बच्चों, गुड़ियो, टेडी-बेयर आदि के साथ मम्मी-डैडी का रोल-प्ले बड़ी खूबसूरती के साथ करती। उसकी प्रगति देख कर जूही को

एक अजब सी खुशी होती। साल के अंतिम दिन ज़ेबा ने पूरे स्कूल के सामने 'थ्री बेयरस और गोल्डीलॉक्स' की कहानी का नाटक अपने दोस्तों के साथ खेला, जिसकी सबने जी भर तारीफ़ किया।

गर्मी की छुट्टियाँ आ गई। जूही अपनी बहन के पास स्काटलैण्ड चली गई।

.....

ऑटम-टर्म यानी सितंबर में जब वह स्कूल लौटी तो पाया ज़ेबा ने अच्छी-खासी लंबाई खीच ली है। धूप में खेलने से उसका रंग कुछ साँवला गया है। उसके बहुत सारे परिचित-दोस्त बन गए थें और वह स्कूल के परिवेश से पूरी तरह परिचित हो गई थी। उसे खुशो-खुर्रम होना चाहिए था पर उसके मिजाज़ में तुर्षी और ज़बान में कड़वाहट आ गई थी। चेहरे और ऑखों में अजब सी उदासी छा गई थी। लगता था जैसे उसके मन का उछाह दब गया हो। सबीना तक़रीबन पूरे दिन से थी, वह अब बाहर ज़रा कम ही निकलती थी। जूही की अपनी व्यस्तता क़ाफ़ी बढ़ गई थी वह भी सबीना से मिलने नहीं जा सकी जो वह पता लगा सके कि ज़ेबा में यह बदलाव क्यों आया है। ज़ेबा की नई टीचर मिस स्मिथ अक्सर स्टाफ़ रूम में ज़ेबा और कुछ और बदमिज़ाज़ बच्चों को ले कर भुनभुनाती रहती।

इधर ज़ेबा प्लेग्राऊँड में खासी उदंण्ड होती जा रही थी उसका मिज़ाज़ बिगड़ा हुआ था। वह अनायास ही अपने साथियों से लड़-झगड़ पड़ती। और तो और कभी कभी वह उन्हें 'शिट, यू गोरा गेट लॉस्ट' या 'आई डोन्ट केयर अ हुड, यू बार्स्टड।' जैसे वाक्य प्ले ग्राउँड में जब-तब उछाला करती। उसके अशोभनीय शब्दावलियों के लिए उसकी क्लास टीचर ने एक-दो बार उसे 'ग्राउंड' भी किया। जब-तब उसकी शिक़ायते जूही के पास भी आने लगीं। जूही और मिस स्मिथ ज़ेबा के मनोविज्ञान को समझने का प्रयास करती पर ज़ेबा उन्हे कोई सहयोग नहीं देती। कभी-कभी जूही को लगता शायद वह इस तरह अपने साथियों के बीच खुद को 'असर्ट' करती है। शायद यह उसके जीवन का एक दौर है जो धीरे-धीरे गुज़र जाएगा।

कभी-कभी जूही को लगता दोहरी संस्कृति का दबाव ज़ेबा को कनफ्यूज़ कर रहा है। वह तनाव में है। घर और बाहर के दो मुँहे परिवेश से वह ताल-मेल नहीं बैठा पा रही है इस लिए विद्रोह पर उतर आई है। उसने नोट किया पिछले काफ़ी दिनों से वह जूही को भी नज़र अंदाज़ कर रही है। कई बार वह जूही को देखते ही कन्नी काट कर निकल जाती। जूही अपनी व्यस्तता में सबीना से मुलाक़ात का समय भी नहीं निकाल पा रही थी। यूँ भी अब ज़ेबा के शिक्षण और विकास का दायित्व उसकी नई टीचर मिस स्मिथ पर था अतः उसने ज़ेबा को ज्यादा तवज्जुह देना बन्द कर दिया। धीरे-धीरे ज़ेबा का सकारात्मक व्यक्तित्व नकारात्मक लक्षण प्रदर्शित करने लगा।

एक दिन लंच-टाइम में ज़ेबा डिनर लेडी से उलझ पड़ी। क्रोध से उसका चेहरा लाल था डिनर लेडी उसे बार-बार पुचकारती हुई ममता भरे स्वर में उससे मनुहार करते हुए कह रही थी ज़ेबा आज तो तुमने कुछ भी नहीं खाया, थोड़ा सा खाना खा लो और ज़ेबा बारबार प्लेट हटा रही थी। अंत में जेबा खाना छोड़ कर, 'यू शिट' कहते हुए खेल के मैदान में भाग गई। भौच्चक डिनर लेडी को उसका व्यवहार बहुत अटपटा और नागवार लगा। उसने लंच के बाद अन्य बच्चो के व्यवहार की रिपोर्ट देते हुए कहा,

'ज़ेबा रहमान पिछले कई दिनों से खाना खाने से इंकार कर रही है या तो उसकी तबियत ठीक नहीं है या उसके व्यक्तिगत जीवन में कुछ कुंठाएं उत्पन्न हो रही है। वह स्कूल में गाली गलौज की असभ्य भाषा इस्तेमाल करती है।' ज़ेबा के बारे में इस तरह की रिपोर्ट कुछ अन्य टीर्चस, स्टाफ़ और बच्चों ने भी दिए थें। जूही ने ज़ेबा की प्रगति शीट मंगाई, उसमें भी उतार परिलक्षित हो रहा था।

अगले सप्ताह खुले सत्र की शाम थी। उसने सोंचा संभवत सबीना और ज़फर से उस दिन मुलाकात हो। उसने ज़ेबा की रिपोर्ट उन बच्चों के साथ रखी जिनके माता-पिता से उसको किन्ही खास कारणों से विशेष बात-चीत करनी थी। ज़ेबा के माता-पिता खुले सत्र की शाम स्कूल नहीं आएं उसने सोंचा, चलो घर की बात है वह उनसे घर पर मिल लेगी और ज़ेबा के व्यवहार में आ रहे परिवर्तन के बारे में भी बात-चीत कर लेगी।

स्कूल के बाद जब वह घर जा रही थी तो सबीना बाहर गार्डेन में सिर पर दुप्ट्टा बाँधे कूड़े का बैग डस्टबिन में डालने जा रही थी। जूही ने उसे वही रोक कर कहा, 'सबीना मुझे तुमसे कुछ बातें करनी है। स्कूल में ज़ेबा बहुत उत्तेजित रहती है। वह ज़िद्दी और शोख़ होती जा रही है। घर में सुकून तो है न? इधर ज़ेबा स्कूल से गैरहाज़िर भी बहुत रहने लगी है?'

सबीना का चेहरा जो हँसी और मुस्कराहटों से पुरज़ोर दमकता रहता था उदास और गुम-सुम-सा लग रहा था। वह कुछ सूखी-सी हँसी, हँस कर, पेट को दाहिने हाथ से सहलाते हुए, दोनों हाथो से कमर को सहारा देते हुए बोली,

'घर में मेंहमान आए हुए हैं। मेरी जच्चगी के वास्ते मीरपुर से फुफी यानी ज़फ़र की अम्मी आई हुई हैं। ज़ेब को मैं कुछ ख़ास तवज्जुह नहीं दे पा रही हूँ। अक्सर दो चार थप्पड़ ज़रूर रसीद कर देती हूँ। घर में तरह-तरह की बातें होती हैं जिसमें कई बार उसे भी शामिल किया जाता है। शायद इसी वजह से वह स्कूल में शोख और बदसलूक़ हो रही होगी। मुझसे भी वह हर वक़्त तुर्की-बतुर्की करती रहती है। जहाँ तक स्कूल से ग़ैर हाज़िर रहने का तआल्लुक है, घर में किसी को अंग्रेज़ी नहीं आती है इसलिए उसे ही बात-चीत करने के लिए अस्पताल वगैरह ले जाना होता है।' और सबीना उससे ज़्यादा बात न कर सकी। उसके ऑखों में ऑसू झलक आए जिन्हें छुपाने के लिए वह जल्दी से पलट कर घर के अंदर चली गई। ऊपर खिड़की से फुफी का दुप्पट्े से ढंका चेहरा झाँक रहा था।

जूही को काफ़ी कुछ बातें समझ आ गई। लंदन का उन्मुक्त वातावरण फुफी को दोज़ख की तरह लगता। घर का सहज-सरल परिवेश उन्हें रास नहीं आ रहा था। अब घर सबीना का नहीं रहा। वह सियासती बातों का अड्डा बनता जा रहा था। हँसते-खेलते घर की बुनावट में फेर-बदल शुरू हो गए.....

कुछ ही दिनों बाद अचानक ज़ेबा सिर पर हिजाब बाँध कर स्कूल आने लगी और फिर एक दिन उसने अपनी टीचर से कहा, वह लंच के लिए घर जाया करेगी। स्कूल का खाना हलाल नहीं होता है। स्कूल के बच्चे और तमाम स्टाफ़ ज़ेबा के बदलते रूप और चलन को कौतुक से देखते। मानो वह कोई और ज़ेबा है जिसे वह नहीं जानते। ज़ेबा की शब्दावली तो यूँ भी बड़ी तेज़ी से बढ़ रही थी अब अपनी बात समझाने के लिए उसके पास शब्दों के ढेर थें। एक दिन ज़ेबा सीधी जेनिफर के आफ़िस पहुँच गई और उससे बोली,

‘मिस मैने रोजे रखें है दोपहर के निमाज के लिए मुझे एक महफूज़ जगह चाहिए। जहाँ मैं और मेरे मुसलमान साथी जानिमाज़ बिछा कर निमाज़ पढ़ सकें।

जेनिफर भी देख रही थी ब्रिटेन धीरे-धीरे एक बहुसंस्कृति का केन्द्र बनता जा रहा है। मिचम में चॉक्लेट फैक्ट्री खुल जाने की वजह से कई एशियन और अफ्रिकन परिवार आ चुके थें। स्कूल की बुनावट भी उसी हिसाब से बदल रही थी।

आफ़िस से बहु-संस्कृति के शिक्षा पर कई सरकारी सरकुलर आ चुके थे। बहुसंस्कृति को लेकर तेज़ी से इनसेट और कांफ्रेंस आदि हो रहे हैं। दिवाली और ईद की छुट्टियाँ सैक्शन हो चुकी थीं। जेबा और अन्य मुस्लिम बच्चों को संगीत के कमरे में निमाज़ पढ़ने की सुविधा दे दी गई। एथनिक बच्चों के भोजन का भी विशेष प्रबंध होने लगा। स्कूल असेम्बली का भी रूप बदला, असेम्बली में अक्सर एथनिक त्योहारों की चर्चा होने लगी। अंग्रेज़ इतने प्रगतिशील होंगे। जूही को भी कभी कभी आश्चर्य होता।

बारो के मल्टी-कल्चरल डिक्लेयर हो जाने से जूही की व्यस्तता बढ़ गई। अक्सर उसे अन्य स्कूलों में इनसेट देने जाना पड़ता था अतः अब वह अधिकतर क्लास न लेकर प्रबंधन का कार्य करने लगी।

उस दिन ज़ेबा को प्लेग्राऊँड में ‘यू ब्लडी फ़किन गोरा’ कहने के लिए अगले दो हफ्ते हॉल में बैठ कर फटे किताबों को रिपेयर कर के उन पर ज़िल्द चढ़ाने की सज़ा मिली थी। वह जूही की निगरानी में बैठी किताबों पर जिल्द चढ़ाने की सज़ा काट रही थी। जूही उस पर निगाह रखती हुई अगले इनसेट की तैयारी कर रही थी। अचानक ज़ेबा ने हाथ मे पकड़ी किताब को उसकी मेज़ पर रखते हुए कहा,

‘मिस एक बात बताएंगी, क्या आप मुसलमान है!’ जूही चकित सी ज़ेबा का चेहरा देखती रही, फिर उसकी पीठ पर स्नेह से हाथ फिराते हुए, उसे आश्स्वत करती हुई बोली,

‘क्यों क्या बात है ज़ेबा! लगता है आज-कल तुम काफी परेशान हो। घर में सब ठीक तो है न?’

‘बताइये न मिस आप मुसलमान हैं न?’ ज़ेबा ने कमर पर दोनों हाथ रखते हुए बालों को झटके से पीछे की ओर फेंका फिर ठुनकते हुए ज़िद की....

‘मैं तुम्हारी टीचर हूँ। तुम्हें प्यार करती हूँ। तुम्हारा ख्याल रखती हूँ। तुम्हें इल्म देती हूँ क्या इतना काफ़ी नहीं है।’

‘मिस मैं जानना चाहती हूँ, आप मुसलमान हैं या हिन्दू। आपको बताना ही होगा।’ उसने शब्दों को चबा-चबा कर सख़्ती से कहा,

जूही ने ज़ेबा के चेहरे को गहराई से पढ़ते हुए, खुद को सहज बनाते हुए कहा,

‘मैं हिन्दू हूँ ज़ेबा। क्या फर्क पड़ता है मेरे हिन्दू या मुसलमान होने से। मैं तुम्हारी टीचर हूँ। तुम्हारी बेहतरी चाहती हूँ। और तुम्हारी अम्मी की आपा हूँ।’

‘सो तो है।’ ज़ेबा ने कहा जरुर, पर जूही का उत्तर सुन कर उसके चेहरे का रंग उतर सा गया। वह कुछ रुंआसी सी बोली,

‘मिस हम लोग जल्दी ही पाकिस्तान वापस चले जाएंगे है। यहाँ स्कूलों में कुछ खास पढ़ाई-लिखाई तो होती नहीं है न। फिर ये गोरे बड़े बदमाश हैं। इनका कोई ईमान भी तो नहीं है।’

उस वक्त जूही ने आगे बात करना मुनासिब नहीं समझा।

ज़ेबा उसे कनखियों से देखती किताबों पर जिल्द चढ़ाने के काम में मशगूल हाने का नाटक करती रही। ज़ेबा के हाथ में बेहद सफ़ाई थी। वह हर काम बड़े क़रीने से करती थी।

जूही काफी देर तक जेबा से हुई बात-चीत के संर्दभ, उसके बदलते हुए तेवर और व्यवहार को समझने का प्रयास करती रही। उसका मन उद्वेलित हो उठा। फुफी, सबीना के जच्चग़ी के लिए पाकिस्तान से आई थीं। उसके आने से घर कें सहज-सरल व्यवहार और रहन-सहन पर गहरा असर पड़ा था। सबीना ने उसे थोड़े ही शब्दों में क़ाफ़ी-कुछ बता दिया था। किशोराअवस्था की ओर क़दम बढ़ाती नासझ बालिका जेबा फिरकापरस्ती के शिकंजे में कसी जा रही थी। जूही का मन कसैला हो उठा। जीवन में पहली बार उसे 'इयर-प्वाएज़निंग' का अर्थ समझ आया। भोली-भाली ज़ेबा नस्ली और मज़हबी बातों का अर्थ और संदर्भ न समझते हुए भी उसके भंवर में फंसती जा रही थी। विष के बीज कितनी जल्दी अंकुरित हो जाते है। वह ज़ेबा के बदलते रवैये से समझ सकती थी।

शाम को घर जाने से पहले जूही ज़ेबा को 'टैकल' करना चाह रही थी पर ज़ेबा अपने अपराधबोध के कारण उसे अनदेखा कर स्कूल बैग संभालती सिर पर हिजाब लगाए घर भाग गई। फुफी बाहर गेट पर खड़ी उसका इंतज़ार कर रही थी।। जूही हताश, उसे फुफी के साथ घर जाते देखती रही। आजकल सबीना जेबा को स्कूल से लेने नहीं आती है। जूही को याद आया पहले ज़ेबा अक्सर लंच टाइम या घर जाने से पहले जुही के पास आ जाती थी और उसे बच्चों से सुने अपने नन्हें-मुन्ने चुटकुले सुनाती दोनों सहज ही साथ-साथ हँसती और फिर यदि कभी सबीना उसे लेने नहीं आ पाती तो ज़ेबा उसके ही साथ घर चली जाती। रास्ते भर वह उसे अपनी ढेरो समस्याएं बताता रहती। जूही भी बड़े ध्यान से उसकी नन्हीं-नन्हीं समस्याओं को सुनती और उनके समाधान का प्रयास करती।

इधर कई दिनों से ज़ेबा फिर स्कूल नहीं आई। मिस स्मिथ ज़ेबा के बारे में चिंता प्रगट कर रही थी।

उस दिन स्टाफ-मीटिंग के सत्र में जूही का मन हुआ कि वह ज़ेबा से हुई बात-चीत को 'एनी अदर बिज़नेस' के संर्दभ में रखे। पर कुछ सोंच कर वह उसे गोल कर गई।

अगले दिन जूही अपने कमरे में बैठी स्कूल रिपोर्ट तैयार कर रही थी तभी जेबा उसके बगल में आ कर खड़ी हो गई और जल्दी से बोली,

'मिस, अम्मी ने कहलवाया है उनकी तबियत ठीक नहीं है। वह किसी भी वक़्त अस्पताल जा सकती है। अस्पताल जाने से पहले वह आप से मिलना चाहती है।'

और जबतक वह ज़ेबा से कुछ और पूछती वह भाग कर अपने दोस्तो में जा मिली।

बस पल भर बाद ही खुली खिड़की से किसी बच्चे के चिल्ला-चिल्ला कर रोने की आवाज़ आई। लगा आवाज़ ज़ेबा की है। उसने खिड़की से झाँक कर देखा। 'यू काँट कैच मी' खेलते हुए ज़ेबा रपट कर गिर पड़ी थी। डिनर-लेडीज़ और प्लेग्राऊँड ड्यूटी पर तैनात टीचर उसे उठाने की कोशिश कर रही थी पर ज़ेबा उनसे 'लीव मी अलोन' और 'डोंट टच मी' कहते हूए छटपटाती हुई ज़ार-ज़ार रोती अपने दाहिने हाथ को सीने से लगाए चिल्ला रही थी,

'आई वान्ट मिस शामा, प्लीज़ कॉल मिस शामा। मिस शामा, मिस शामा, आई वांट यू।' एक बच्चा भागा-भागा जूही के पास आया और बोला,

‘मिस शामा, ज़ेबा हैज़ फ़ालेन डाउन। शी इज़ क्राइंग फार यू। प्लीज़-प्लीज़ कम अदर वाइज़ शी विल डाय। यू नो शी इज ब्लीडिंग एज़ वेल।’ बच्चा घबराया हुआ था।

‘ओ. के.’ कहते हुए जूही ने रिपोर्ट-बुक को मेज़ की दराज़ में रखते हुए बच्चे से कहा,

‘यू बेटर गो एन्ड रिपोर्ट इट टु मिस डेविस एन्ड आस्क हर टु कॉल एन एबुलेन्स। इट लुक्स लाइक वी माइट हैव टु टेक ज़ेबा टु हॉस्पिटल।’

‘मिस, यू रादर हरी अप, शी इज़ इनं लॉट ऑफ़ पेन, शी वोन्ट लेट एनीबडी टच हर।’

‘ओ. के. हैरी यू डू, ह्वाट यू आर टोल्ड। आई शैल सी ह्वाट कैन आई डू? टेल मी डिड यू पुश हर?’

‘नो मिस, इट वॉज़ एन एक्सीडेन्ट। वी वर प्लेइंग यू कान्अ कैच मी।’ कहते हुए हैरी डर कर रोने लगा।

‘ओ. के. हैरी। आई एम नॉट ब्लेमिंग यू। आइ हैव टु नो द फैक्ट बिफोर आई कैन डील विथ हर, यू बेटर रश टु मिस डेविस।’

जूही के पास आते ही ज़ेबा उसकी छाती से ऐसे चिपटी-लिपटी जैसे कोई अर्से से भूखा-पयासा बच्चा माँ की छाती से चिपट कर दूध के लिए मुँह मारता हो। ज़ेबा टूटी हड्डी का दर्द भूल कर जूही से उसकी बेरुख़ी और नाराज़गी के गिले-शिक़वे उर्दू-इंग्लिश में करने के साथ बोली,

‘आई नो मिस यह खुदा का कुफ्र मुझ पर गिरा है। मैंने फुफी-अम्मा की बुरी बातों पर यक़ीन जो किया कि आप गंदी हैं गोरे गंदे हैं। यू आर दी बेस्ट। यू आर माई बेस्टेस्ट टीचर इन द होल वर्ल्ड। ’

जूही ने उसे प्यार और ममता से सहलाते हुए कहा, ‘मैं नाराज़ कहाँ हूँ जेबा, मैं तो तुम्हें बेहद प्यार करती हूँ। देखों ना तुमने मुझे पुकारा और मैं सारा काम छोड़ कर तुम्हारे पास चली आई। ख़ुदा हमपे मेहर करता है कुफ़्र नहीं। बुरा वो होता है जो दूसरों को बुरा कहता है।’

तब तक एम्बुलेन्स आ गई, मिस डेविस ने वक्त के नज़ाकत को पहचानते हुए कहा,

‘मिस शामा, तुम ज़ेबा के साथ हॉस्पिटल चली जाओ। मैं ज़ेबा के माता-पिता को सूचित करती हूँ।’

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें